21/06/2021 B.A Subsidary Paper I

Q. प्राथमिक समूह की परिभाषा और उसके विशेषताओं का वर्णन करें।

Ans प्राथमिक समूह (Primary Group)"
प्राथमिक समूह शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कूले (Cooley) ने किया था। उनके अनुसार "प्राथमिक समूहों से तात्पर्य उन समूहों से है जो घनिष्ठ आमने सामने के सम्बन्ध एवं सहयोग द्वारा चारित्रिक होते हैं। वे कई दृष्टिकोणों से प्राथमिक है परन्तु मुख्यतया इस कारण से कि वे व्यक्ति के सामाजिक एवं प्राकृतिक आदर्शों के निर्माण करने में मौलिक है। घनिष्ठ सम्बन्धों के परिणामस्वरूप व्यक्तियों का एक सामान्य समूह में पूर्णतया एक प्रकार से घुल-मिल जाना होता है। सम्भवतः इस पूर्णता का वर्णन करने की भाँति सरल विधि यह कहना है कि हम हैं इसमें एक प्रकार की सहानुभूति और परस्पर सम्पर्क निहित है। जिसके लिए हम की स्वाभाविक अभिव्यक्ति होती है।
मैकाइवर तथा पेज के अनुसार "प्राथमिक समूह जिनमें आमने-सामने के सम्बन्ध होते हैं प्रत्येक समाज का केन्द्र बिन्दु होता है और जिसे हम प्रत्येक जटिल सामाजिक संरचना में देख सकते हैं।
के डेविस के अनुसार "प्राथमिक समूह एक मूर्त समूह है जैसे परिवार, क्रीड़ा समूह पड़ोसी-समूह आदि इन समूहों में आमने-सामने का सम्बन्ध होता है।"

किंग्सले के अनुसार, प्राथमिक समूह से हमारा अभिप्राय ऐसे समूह से होता है जो विशेष रूप से सहयोगी हो तथा जिसके सदस्य एक दूसरे से पूर्ण रूप से परिचित होते हैं किन्तु इन्हें विशेष रूप से प्राथमिक कहा जाता है क्योंकि इसमें सदस्य निरन्तर एक दूसरे का समाधान करते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि प्राथमिक समूह एक व्यक्ति को अपने भावी जीवन के संचालन के लिए उचित मार्ग दर्शन करता है। प्राथमिक समूह में रहकर व्यक्ति सहिष्णुता, सहानुभूति, प्रेम, न्याय कर्तव्य-निष्ठा, आत्मीयता का पाठ पढ़ता है। कूले ने लिखा है कि "हमारे चारों ओर के संसार में ऐसी समिति स्पष्टतया मानव स्वभाव की नर्सरी है।" प्राथमिक समूहों के प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं - क्रीड़ा समूह, मित्र मण्डली, वार्तालाप, समूह, सहभागिता (Partnership) स्थानीय प्रादेशिक अध्ययन समूह, जनजातीय परिषद, परिवार तथा गाँव इत्यादि।

प्राथमिक समूह की विशेषताएँ - इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

(1) हम की भावना - इस समूह में व्यक्तियों में परस्पर सम्बन्ध होता है तथा सभी के समान उद्देश्य होते हैं इस कारण व्यक्तियों में आपस में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति की

भावना का होना भी आवश्यक है।

(2) समान उद्देश्य – प्राथमिक समूहों में रहने वाले सदस्यों के उद्देश्य में समानता रहती है, क्योंकि वे सभी एक स्थान पर रहते हैं तथा एक सी संस्कृति होती है। समरूपता के कारण उनके उद्देश्य भी समान होते हैं।

(3) वैयक्तिक सम्बन्ध → प्राथमिक समूहों में सभी सदस्यों के आपसी सम्बन्ध व्यक्तिगत होते हैं। प्रायः सभी एक दूसरे को नाम से जानते हैं और इस प्रकार के समूहों में सामाजिक स्थिति ऊँच-नीच की भावना पर आधारित न होकर अन्य सामाजिक कारणों पर आधारित होते हैं। इन समूहों में व्यक्ति के महत्व को पूरा-पूरा ध्यान में रखा जाता है।

(4) सम्बन्धों की पूर्णता – इन समूहों में व्यक्ति पूर्णरूप से भाग लेता है। घनिष्ठ सम्बन्ध चरम सीमा पर होते हैं।

(5) समूहों की लघुता – इस समूह में सम्बन्ध प्रत्यक्ष होते हैं, इसी कारण सदस्यों की संख्या भी थोड़ी होती है और समूह छोटा होता है। समूह के सदस्य शारीरिक दृष्टि से एक दूसरे के समीप होते हैं।

(6) शारीरिक समीपता → प्राथमिक समूह की प्रथम विशेषता है कि इसके सदस्यों के बीच शारीरिक समीपता होती है।

(7) स्वजात सम्बन्ध :- प्राथमिक समूहों के सदस्यों के सम्बन्ध एवं स्वाभाविक होते हैं अर्थात् आधिकारिक स्वजात अथवा स्वतः होते हैं। इनमें कोई शर्तें नहीं पाई जाती हैं।

(8) सम्बन्ध स्वयं साध्य होते हैं - प्राथमिक समूहों ~~के सदस्यों के सम्बन्ध एवं स्वाभाविक होते हैं अर्थात् आधिकारिक स्वजात~~ का उद्देश्य किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति करना नहीं होता न ही इसमें स्वार्थ सिद्धि की भावना होती है।

(9) सम्बन्धों में निरन्तरता → इन समूहों में स्थिरता तथा निरन्तरता होती है, इसी कारण इनमें घनिष्ठता अधिक होती है। सम्बन्धों की अवधि भी लम्बी होती है।

Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of Sociology
Date - 21/06/2021